वर्षः 3। पत्रिका अंकः 1 | चतुर्थ संस्करण | जून 2021

पुरूषों एवं युवाओं की सहभागिता से किशोरी सशक्तिकरण की एक नयी पहल

सामाजिक ताना–बाना के बीच किशोरियों का जीवन बड़ा ही चुनौतीपूर्ण होता है। किशोरियों की शिक्षा और विवाह जैसे प्रमुख मुद्दों पर सामान्यतया पिता या बड़े भाई ही निर्णय लेतें है, जिसके कारण किशोरियों को अपनी क्षमता की पहचान नहीं हो पाती और वह अपने को कमजोर या ठगा सा महसूस करती हैं। इसी बात को ध्यान में ध्यान रखते हुए उमंग कार्यक्रम ने, जेंडर आधारित भेदभावपूर्ण रीति रिवाजों पर पुरूषों एवं युवाओं के बीच खुलकर परिचर्चा की शुरुआत की है, जिससे किशोरी सशक्तिकरण की दिशा में समाज के अंतर्गत संवेदनशील एवं सकारात्मक वातावरण का निर्माण हो सके।

इस परिचर्चा के लिए उमंग कार्यक्रम के तहत, पितृसत्ता एवं मर्दानगी जैसे विषयों पर 12 सत्रों का एक थ्योरी आधारित करिकुलम तैयार किया गया है, जिसके प्रत्येक सत्र पर परिचर्चा करने में लगभग 60–90 मिनट का समय लगता है। इस करिकुलम को तैयार करते समय उमंग सदस्यों के अलावा गाँव के पुरुषों एवं युवकों के सुझावों को भी ध्यान मे रखा गया है। यह परिचर्चा, जेंडर आधारित भेदभाव, वर्तमान रीति–रिवाजों के मूल्यांकन के साथ–साथ पुरुषों एवं युवाओं के खुद की सोच एवं समाज के प्रति अपनी भूमिका के आंकलन का अवसर भी देता है।

इस परिचर्चा की शुरुआत जिला, प्रखंड एवं पंचायत स्तर पर जिलाधिकारी, प्रखंड अधिकारी एवं मुखिया की अध्यक्षता में 40–50 पुरुषों एवं युवाओं के साथ की गयी है। साथ ही गोड्डा एवं जामताड़ा जिले के चार प्रखंडों (गोड्डा, महागामा, जामताड़ा एवं नाला) से 216 गाँवों को चयनित कर इन गाँवों में रहने वाले किशोरों, युवाओं एवं पुरुषों की सहमति के आधार पर परिचर्चा के लिए छोटे–छोटे समूह का निर्माण कर सूची बनायी गयी साथ ही ऐसे युवाओं एवं पुरुषों को भी चिन्हित किया गया, जो परिचर्चा में अग्रणी भूमिका निभा सकें।

"नेहरू युवा केन्द्र संगठन गोड्डा जिला में ICRW एवं SATHEE संस्था के साथ मिलकर उमंग परियोजना के तहत युवा क्लब को जोड़ने का काम किया है, यह सराहनीय कदम है। आने वाले समय में गोड्डा जिला में किशोरी सशक्तिकरण के माध्यम से बाल विवाह दर में निश्चित कटौती आएगी।"

अभिषेक मंडल
जिला युवा समन्वयक
नेहरू युवा केन्द्र संगठन, गोड्डा

नेहरू युवा केन्द्र संगठन की सहभागिता :

प्रखंड स्तर पर नेहरू युवा केन्द्र की टीम एवं युवाओं के साथ एक कार्यशाला आयोजित करते हुए ग्रामीण स्तर पर परिचर्चा की शुरुआत जनवरी 2021 से की गयी है। इस परिचर्चा में नेहरु युवा केंद्र के अंतर्गत पंजीकृत क्लब के युवा बहुत ही उत्साह के साथ बैठक में भाग ले रहे हैं। मार्च 2021 तक गोड्डा एवं जामताड़ा के लगभग 8000 किशोर युवा एवं पुरुष इन परिचर्चाओं में भाग लें चुके हैं। उमंग कार्यक्रम का लक्ष्य लगभग 20000 किशोर, युवा एवं पुरुषों को परिचर्चा में शामिल करते हुए जेंडर, पित्रसत्ता एवं मर्दानगी आधारित मुद्दों पर समाज में किशोरियों के लिए अनुकूल वातावरण का निर्माण करना है, जिससे किशोरियां सशक्त हो सकें एवं बाल विवाह के दर में कमी आये।

साथियों,
उमंगवाणी के अगले अंक के साथ आप लोगों का अभिनन्दन!

''हिंसा छोटे से बड़ा हो जाता है। हमारे विचार से हिंसा को छोटे में ही खत्म करना चाहिए।'' उस 13 वर्षीय लड़के की बात मुझे आज भी याद है। अक्टूबर 2015, खूंटी जिले का एक स्कूल, पेड़ के चारों तरफ बने चबूतरे पर अपने दोस्तों के साथ बैठ कर वो मुझे GEMS (Gender Equity Movement in School) प्रोग्राम के बारे में बता रहा था। दीपेश (नाम बदला हुआ है) के इस छोटे से वाक्य में स्थिति की गंभीरता और उम्मीद दोनों ही झलकते हैं। बात को आगे बढ़ाते हुए साथ बैठी लड़की ने बताया कि किस तरह इस प्रोग्राम ने उसके स्कूल का माहौल बदल दिया है। वो कैसे? मेरे पूछने पर बच्चों ने बताया कि अब वो मजे से साथ बैठते हैं, पढ़ते और खेलते है... एक ने हँसते हुए बताया।

GEMS एक स्कूल प्रोग्राम है। इसका उद्देश्य जेंडर बराबरी को बढ़ावा देना और जेंडर आधारित हिंसा को रोकना है ताकि ऐसा समाकुल स्थिति बने जिससे किशोरियां और किशोर अपनी पढ़ाई और पूरी क्षमता हासिल कर सकें। यह प्रोग्राम 6–8 कक्षा के लड़कियों और लड़कों के साथ झारखण्ड, महाराष्ट्र और राजस्थान के बहुत सारे स्कूलों में सफलतापूर्वक चलाया गया था और उन्हीं अनुभवों और सीखों के आधार पर ICRW, Echidna Giving के आर्थिक सहयोग एवं झारखण्ड सरकार के सौजन्य से, बदलाव फाउंडेशन और साथी के साथ मिलकर गोड्डा और जामताड़ा जिलों के 201 स्कूलों में GEMS प्रोग्राम शुरू कर रहा है। यह प्रोग्राम 6–11 कक्षा के किशोरियों और किशोरों के साथ प्रशिक्षित शिक्षकों के नेतृत्व में लागू किया जायेगा और 30,000 किशोरियों और किशोरों के साथ मिलकर तीन मुख्य सीखों पर आधारित होगी **1) शीघ्र शुरुआत –** विभिन्न समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से बच्चे कम उम्र से जेंडर आधारित काम और जिम्मेदारियों, अपेक्षाओं, उचित–अनुचित को जानने और समझने लगते हैं। इसलिए यह जरुरी है कि इसी उम्र से बच्चों से इन मुद्दों पर बात की जाए ताकि उनमें इन मुद्दों को देखने का अलग नजरिया उत्पन्न हो। साथ ही साथ विश्लेषण करने की और इन पर प्रश्न उठाने की क्षमता भी आ सके। **2) जेंडर परिवर्तनकारी दृष्टिकोण –** जेंडर बराबरी को बढ़ावा देने के लिए जरुरी है कि शिक्षकों और बच्चों में जेंडर सबंधों में निहित सत्ता और उसके प्रभाव को समझने, अपनी सोच और व्यवहार पर आत्मचिंतन और विश्लेषण करने और गैर बराबरी के सत्ता संबंधों पर प्रश्न करने और बदलाव की क्षमता आए। **3) समाजीकरण की प्रक्रिया** में स्कूल और शिक्षकों की भूमिका बहुत अहम् है। एक संस्था के तौर पर स्कूल बहुत सारे बच्चों तक पहुंच कर उनपर दीर्घकालीन प्रभाव डालते हैं। पर जेंडर बराबरी को बढ़ावा देने के लिए स्कूली प्रक्रिया, पाठ्यक्रम और पद्धति में बदलाव की जरुरत है। जेंडर समता एक सतत प्रक्रिया है और उस ओर GEMS एक छोटा मगर महत्वपूर्ण कदम है।

आगमिक महीनों में इस प्रोग्राम के बारे में आप से और जानकारी तथा अनुभव साझा करेंगे। तब तक के लिए अपना और अपनों का ख्याल रखें। मास्क लगाना और 2 गज की दूरी रखना न भूलें। याद रखिए कि इलाज से बेहतर रोकथाम है। इस महामारी के दौरान आप सब सुरक्षित एवं स्वस्थ्य रहें, यही हमारी कामना है।

प्रणीता अच्युत,
डायरेक्टर ऑफ रिसर्च एंड प्रोग्राम, ICRW

अब उमंग, नुक्कड़ नाटक संग

"थिएटर ज्ञान का एक दूसरा रूप है। साथ ही साथ सामाजिक बदलाव का एक महत्वपूर्ण साधन है। थिएटर हमें हमारे भविष्य को सुरक्षित करने में भी मदद कर सकता है। " (अगस्त बोएल)

इस दुनिया में शायद ही दूसरी कोई कला शैली (आर्ट फॉर्म) होगी जो थिएटर जैसी शक्तिशाली हो, क्योंकि थिएटर सिर्फ एक कला शैली ही नहीं बल्कि कई कला मंचों का एक सम्मिलित उपस्थापन है जो समाज को सिर्फ मनोरंजन ही नहीं बल्कि सीख व समझ देने में भी एक अहम् भूमिका निभाती है। उमंग परियोजना में काम करते हुए हमे ज्ञात हुआ कि एक लड़की के भविष्य को नियंत्रित करने में सामाजिक मान्यता एवं मानदंड कितनी अहम् भूमिका निभाते हैं। हमने देखा है की कई माता–पिता ''समाज में ऐसा नहीं होता'',''सभी ऐसा ही करते हैं'' या ''लोग क्या बोलेंगे'' जैसे तर्क देकर अपनी बेटी की पढाई यह कह कर बीच में ही रोक देते हैं या उनकी शादी कम उम्र में कर देते हैं। इसी आयाम में सामाजिक व्यवहार एवं सोच में परिवर्तन के लक्ष्य से एक नए अभियान की शुरुआत की गई है जो एक समन्वित संचार माध्यम है, और जिसमें नुक्कड़ नाटक एक अहम् भूमिका निभाती है। नुक्कड़ नाटक के प्रभाव और उसके व्यापक सामाजिक पहुंच को मद्दे नजर रखते हुए, उमंग परियोजना के तहत इस अनोखे अभियान की रचना की गई है जिसका शीर्षक है ''उजाले की ओर – बिटिया की दौड़''।

"उजाले की ओर–बिटिया की दौड़ " सिर्फ एक नुक्कड़ नाटक अभियान ही नहीं, बल्कि सामाजिक सहभागिता का एक अहम् मंच है। माता–पिता और समुदाय के लोग समाज के वो सदस्य हैं जो बाल विवाह और बच्चों की शिक्षा जैसी विषयों पर सबसे अहम् भूमिका निभाते हैं। नुक्कड़ नाटक के मनोरंजन भरे माध्यम से हम समाज में माता–पिता को बाल विवाह एवं बच्चों की शिक्षा के प्रभाव के बारे में अवगत कराने के साथ–साथ उन अभिभावक को सम्मानित भी कर रहे हैं जो अपनी बेटियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में अग्रिम भूमिका निभा रहे हैं। अभिभावकों द्वारा शपथ–पत्र पर हस्ताक्षर कर अपनी बेटियों को स्कूल भेजने में पहल करने और उनकी उच्च शिक्षा को सुनिश्चित करने का संकल्प लेना भी इस अभियान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है ।

क्रमशः 4 एवं 5 मार्च 2021 को इस अभियान की शुरुआत उमंग के दोनों ही जिलों गोड्डा एवं जामताड़ा के उपायुक्त के द्वारा नुक्कड़ नाटक रथ को झंडा दिखा कर गाँव की ओर रवाना कर किया गया और शपथ–पत्र में हस्ताक्षर करते हुए जामताड़ा के उपायुक्त श्री फैज अक अहमद मुमताज तथा गोड्डा के उपायुक्त श्री भोर सिंह यादव ने उमंग के इस अनोखे पहल को सराहते हुए कहा कि सभी लोग इसी तरह एकजुट होकर काम करेंगे तो निश्चय ही बाल विवाह के दर में कमी आएगी। लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने, स्कूल ड्राप–आउट एवं बाल विवाह को रोकने के उद्देश्य से संचालित इस अभियान का लक्ष्य लगभग पचास हजार लोगों तक अपनी सीधी पहुँच सुनिश्चित करना है।

इस अभियान में उमंग परियोजना के सहयोगी संस्था साथी एवं बदलाव फाउंडेशन की भूमिका अहम् रही है साथ ही बंगला नाटक डॉट कॉम संस्था के तकनीकी सहयोग से यह नुक्कड़ नाटक अभियान सफलतापूर्बक संचालित किया जा रहा है।

उल्लेखनीय है की, सम्पूर्ण अभियान में उमंग और बांग्लानाटक के तरफ से कोविड–19 सम्बंधित सतर्कता और सावधानियों का विशेष रूप से पालन किया गया, जैसे नाटक कार्यशाला के दौरान सभी प्रतिभागियों को मास्क और सेनिटाईजर उपलब्ध करवाया गया और यह निश्चित की गयी की प्रशिक्षण के दौरान वे आपस में आवश्यक शारीरिक दूरी बनाये रखें। साथ ही गाँवों में प्रदर्शन के दौरान उपस्थित दर्शकों में मास्क और सेनिटाईजर का निःशुल्क वितरण किया गया और प्रदर्शन को किसी खुले और बड़े प्रांगण में ही आयोजित किया गया। प्रदर्शन के पूर्व, दौरान और अंत में सभी दर्शकों को कोविड सम्बंधित जानकारी दी गयी और प्रदर्शन स्थल में कोविड–19 सुरक्षा विधि पर आधारित बैनर का प्रदर्शन भी किया गया।

अभियान का लक्ष्य 220 गाँवों में लगभग 50000 ग्रामीणों तक नुक्कड़ नाटक का प्रदर्शन करना है, लेकिन कोविड–19 की दूसरी लहर को मद्देनजर रखते हुए एवं सरकार के निर्देशों का पालन करते हुए अप्रैल माह से नुक्कड़ नाटक कैंपेन रोक दी गयी है। सरकार के अगले निर्देश आने पर पुनः शुरुआत की जाएगी।

अभियान, अप्रैल के 06 तारीख तक 143 गाँवों के लगभग 34000 ग्रामीणों के पास अपना सन्देश पहुंचा चुकी है और लगभग 5000 माता–पिता और अभिभावकों ने शपथ–पत्र पर हस्ताक्षर करते हुए उमंग के इस मुहीम से जुड़ कर अपनी बेटियों को उच्च शिक्षा देने में अपनी सम्मति प्रदान की है।

जामताड़ा DC द्वारा अभियान का शुभारम्भ

गोड्डा DC द्वारा पोस्टर बिमोचन

प्रदर्शन पूर्व दर्शकों में मास्क वितरण

सम्मानित छात्राएं

हस्ताक्षरित शपथ पत्र

आमंत्रण पत्र

कोविड सतर्कता हेतु बैनर

पोस्टर

नुक्कड़ नाटक कार्यशाला बैनर

नुक्कड़ नाटक (बैकड्रॉप) बैनर

सुनीता की कहानी

"प्रतिमा मेरी सबसे प्यारी सहेली है। हम दोनों एक ही गाँव में रहते हैं और जब तक एक बार रोज मुलाकात ना हो अच्छा नहीं लगता। मुझे आज भी वह दिन याद है, जिस दिन अचानक प्रतिमा के पापा का देहांत हो गया और वह मुझे पकड़कर लगातार रोती रही। "अब मेरा और मेरी माँ का क्या होगा?" बार–बार रोते हुए एक ही बात दोहरा रही थी। मैं प्रतिमा से गले लगकर बहुत रोई पर उस समय मैं उसकी कोई मदद नहीं कर पाई। परन्तु मैंने प्रतिमा का हौसला बढ़ाया और हम दोनों ने अपनी पढ़ाई जारी रखने व भविष्य में कुछ बनने का निश्चय किया। आज जब उमंग दीदी की मदद से मेरी सहेली और उसकी माँ, सरकारी योजना को प्राप्त करने की प्रक्रिया वी एल सी पी सी (ग्राम स्तरीय बाल संरक्षण समिति) के माध्यम से शुरू की, तो मुझे थोड़ा अच्छा लग रहा है। मन से बस एक ही आवाज आ रही है ''थैंक यू, वी एल सी पी सी,। सच में, इस बैठक में शामिल होकर ही प्रतिमा और हम सब को इन सरकारी योजनाओं की जानकारी मिली और उम्मीद है कि योजना का लाभ भी शीघ्र मिलेगा।

समिति की बैठक में जब प्रतिमा के पिताजी के देहांत के बाद उसके परिवार की चुनौतियों को साझा किया गया तो समिति के अन्य सदस्यों के सामूहिक सुझाव से सरकारी योजना का लाभ पाने के लिए उसे जाति, आवास, एवं आय से जुड़े सभी दस्तावेज बनाने के लिए बताया गया और उमंग दीदी की मदद से उन सभी जरुरी कागज़ातों को बनाने के लिए ऑनलाइन अप्लाई भी कर दिया गया। सिर्फ प्रतिमा ही नहीं, बल्कि मेरी एक और सहेली ने भी वी एल सी पी सी की बैठक से जानकारी ली और अपने दस्तावेज प्राप्त करने की प्रक्रिया शुरू कर दी।

इस वी एल सी पी सी बैठक के माध्यम से हम बच्चों की सुरक्षा पर चर्चा करते हैं और साथ ही अनाथ, असुरक्षित, कम उम्र में शादी या कम उम्र में मजदूरी करने वाले बच्चों को चिन्हित कर उनके सरंक्षण की पहल करते हैं। मुझे हर महीने इस बैठक एवं बच्चों के मुद्दों पर चर्चा करने का इंतज़ार रहता है।

आज सिर्फ मैं ही नहीं हमारे उमंग ग्रुप के कई सदस्य इस वी एल सी पी सी के साथ जुड़ चुकी हैं और बैठकों में शामिल होती हैं। बच्चों की समस्याओं को उजागर करने के लिए एवं समिति के साथ जुड़ने का मौका देने के लिये मैं सहिया दीदी और उमंग परियोजना के सभी को धन्यवाद देती हूँ ।"

– सुनीता हेब्रम, उम्र 16 साल, सहरडाल गाँव, जामताड़ा।

...और एक आम सत्र खास बन गया।

एक सही योजना और उससे जुड़ी हुई कोई भी गतिविधि कैसे साधारण से खास हो जाती है इसका एक विशेष उदाहरण है इस बार जेम्स परियोजना के सहयोग से प्रबंधित विधालय प्रबंधन समिति प्रशिक्षण का आयोजन।

हालाँकि, बेलसर स्कूल के प्रधान शिक्षक होने के नाते इस से पहले भी हमने एस एम सी ट्रेनिंग में भाग लिया था, जहाँ पंचायत द्वारा चयनित किसी एक स्कूल में इस ट्रेनिंग को आयोजित किया जाता था, जिसमें सिर्फ मौखिक रूप से केवल विद्यालय विकास और विद्यालय प्रबंधन से सम्बंधित जानकारी दी जाती थी। पूर्व में एक ही स्कूल में प्रशिक्षण आयोजित होने और सिर्फ मौखिक रूप से ही सत्रों पर चर्चा होने के कारण सदस्यों की उपस्थिति और चर्चा के प्रति अवधान व एकाग्रचित भागीदारी एक चुनौती हुआ करती थी।

फलस्वरूप, जब पहली बार जेम्स कार्यकर्ताओं द्वारा एस एम सी ट्रेनिंग के बारे में मुझे सूचित किया गया तो मैं ज्यादा उत्साहित नहीं था। लेकिन जब पता चला कि अब इस प्रशिक्षण का आयोजन हमारे ही स्कूल में किया जाएगा और जब इसकी रूपरेखा व सत्र के संचालन के बारे में हमें पूर्ण अवगत करवाया गया, तब ही मुझे यकीन हो गया कि यह सत्र जरूर कुछ खास होगा। साथ ही साथ इसमें शामिल होने के बाद आज मुझे यह बात कहने में थोड़ी सी भी झिझक नहीं है कि सही मायने मे एस एम सी प्रशिक्षण तो ऐसा ही होना चाहिए।

प्रशिक्षण के विषय तो वही थे, लेकिन प्रोजेक्टर और ऑडियो विजुअल माध्यम द्वारा उपस्थापित होने के कारण, विद्यालय संचालन, मीनू अनुसार मध्यान्ह भोजन, विद्यालय की साफ–सफाई, स्वच्छता, छात्रों को मिलने वाले लाभ, भोजन की गुणवत्ता, छात्रों की नियमित उपस्थिति, ड्राप–आउट, विद्यालय को मिलने वाले पैसे, एस एम सी/एम डी एम का खाता–संचालन आदि विषयों पर आधारित सत्र सदस्यों के समक्ष एक नए रूप से सामने आया। प्रशिक्षण में सदस्यों की 100% भागीदारी स्व–उत्साहित परिचर्चा सत्र के सफल और रोचक होने का सबुत बयां करती है। इसके साथ ही, इस बार जेम्स परियोजना के कार्यकर्त्ता की उपस्थिति भी सहायक रही, जिन्होंने एस एम् सी की भूमिका एवं कार्य के साथ विस्तारपूर्वक बाल विवाह, जेंडर, बाल श्रम आदि मुद्दों पर भी चर्चा की। साथ ही कोविड–19 के दौरान बरतने वाली सावधानियों पर भी विचार विमर्श कर प्रशिक्षण को पूर्ण रूप दिया गया।

धन्यवाद जेम्स, उसी एस एम सी सत्र को एक नए और प्रासंगिक शैली के साथ उपस्थापित करने के लिए और हमें उससे अवगत करवाने के लिये।

आशा है कि हमारे स्कूल में आपके महत्वाकांक्षी दृष्टिकोण का सफलतापूर्वक परिपालन हो, तथा हम एक उज्ज्वल भविष्य की ओर अपने बच्चों को कदम बढ़ाते हुए देखें।

दिवाकर साह, प्रधान शिक्षक, बेलसर

बाल विवाह रोकने के लिए महिलाएं कमर कस रही हैं

प्रोजेक्ट कंसर्न इंटरनेशनल झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी के साथ साझेदारी में अपने समुदायों में बाल विवाह की किसी भी घटना को रोकने के लिए एवं एक सक्षम वातावरण बनाने के लिए स्वयं सहायता समूह की संघबद्ध संरचना को मजबूत कर रही है। इस प्रक्रिया में स्वयं सहायता समूहों की महिला सदस्य अपनी बेटियों के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने में सक्षम होती हैं ताकि बेटियों की आकांक्षाओं को पूरा करने में उनकी समर्थन कर सके। प्रशिक्षण के कैस्केड मॉडल के माध्यम से सक्रिय महिलाएं स्वयं सहायता समूह के सदस्यों को सामाजिक मानदंडों की नकारात्मकताओं के प्रति संवेदनशील बनाती हैं और महिलाओं को यह पहचानने के लिए प्रोत्साहित करती हैं कि जीवन का लक्ष्य सिर्फ शादी नहीं बल्कि अपने पैरों पर खड़ा होना है।

पहले तीन उन्मुखीकरण विषय हैं – लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए जीवन में समान अवसरों का महत्व, व्यवसाय विकल्पों में लिंग भेदभाव का प्रभाव, और बेटियों की शिक्षा और आकांक्षाओं का समर्थन करने के लिए घर पर वैकल्पिक कथन और विवाह को एकमात्र गंतव्य के रूप में अस्वीकार करना। अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय बालिका दिवस, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस जैसे ग्रामीण स्तर के कार्यक्रमों के साथ मॉड्यूलर सत्रों ने माताओं को अपनी बेटियों के साथ और अधिक खुलने और उनकी आकांक्षाओं पर चर्चा करने में मदद की है।

इसके अलावा, उमंग मॉड्यूलर सत्रों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने, प्रतिभागियों से प्रतिक्रिया प्राप्त करने और उमंग गतिविधियों के कार्यान्वयन की निगरानी के लिए 'क्लस्टर स्तर संगठन के सोशल एक्शन कमिटी' सदस्यों को मजबूत किया जाता है।

जैसे–जैसे उमंग स्वयं सहायता समूह प्लेटफार्मों के माध्यम से समुदायों में गहराई से प्रवेश कर रही है, माताएं अपने पतियों से बात कर रही हैं कि वे अपनी बेटी की शादी के लिए जल्दबाजी न करें और उन्हें उच्च शिक्षा के अवसर दें और करियर की तलाश करें। अब, परिवार यह महसूस कर रहे हैं और पहचान रहे हैं कि विकल्प संभव हैं और उन्हें अपनी सोच को बदलने और अपनी बेहतरी के लिए बाहर निकलने की जरूरत है।

आभार

उमंग कार्यक्रम के समर्थन के लिए हम आईकीया (IKEA) फॉउण्डेशन के आभारी हैं।
इस पत्रिका की रचना और प्रसार में हमारे स्थानीय भागीदारों – साथी (गोड्डा), प्रोजेक्ट कंसर्न इंटरनेशनल एवं बदलाव फॉउण्डेशन (जामताड़ा) – के सहयोग लिए हम उन्हें धन्यवाद देते हैं।
उमंग वाणी की कल्पना और लेखन में उमंग टीम के इन सदस्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है – **आई.सी.आर.डब्लयु. –** डॉ. रवि वर्मा, अमाजित मुखर्जी, प्रणीता अच्युत, डॉ. नसरीन जमाल, राजेन्द्र सिंह, तन्वी झा, पारस वर्मा, नलिनी वी. खुराना, बिनीत झा, त्रिलोकी नाथ, शक्ति घोष, आकृति जयंत, **प्रोजेक्ट कंसर्न इंटरनेशनल –** अंकिता कशिश, नवाब परवेज, पूनम कुमारी, संजीव सिंह, अनीता कुमारी, शालिनी कुमारी, **साथी –** डॉ. नीरज कुमार, नेहा सरकार, बिभाष झा, सुबोध माझी, **बदलाव फॉउण्डेशन –** अरविन्द कुमार, दिनेश यादव, देबाशीष दास, रामरूप सिंह। **बांगला नाटक डॉट कॉम –** अनन्या भट्टाचार्य, निर्माल्य राय, सन्तु गुछाइत।

इस न्यूज़लेटर के बारे में जानकारी के लिए इन्हें संपर्क करें –

संपर्क व्यक्ति	संस्था का नाम	मोबाइल नंबर
डॉ. नसरीन जमाल	आई.सी.आर.डब्लयु.	9431391359
सुश्मिता मुखर्जी	पी. सी. आई.	8920132942
डॉ. नीरज कुमार	साथी	7004905488
अरविन्द कुमार	बदलाव फॉउण्डेशन	8210932507

ICRW Ranchi Office:
405, 4th Floor, Krishna Mall, Ashok Nagar,
Between Road No. 1&2, Opposite Central GST Office,
Ranchi - Jharkhand - 834002
Tel. - 0651-2244416/2244417

ICRW Asia Regional Office:
C-59, South Ext. Part II, New Delhi-110049
Tel. : 91-11-4664.3333 ,
Fax : 91-11-2463.5142
Email : Info.india@icrw.org

Design By: Inzenius Consultancy Services Pvt. Ltd./2021/06